KNOWLEDGEABLE RESEARCH (KR)
ISSN: 2583-6633 | CODEN: KRABAU
International Open-Access Peer-Reviewed Refereed Multidisciplinary Journal
https://knowledgeableresearch.com
Vol. 5, Issue 06,2026
DOI:

Received: 10/05/2026 | Accepted: 25/06/2026 | Published: 30/06/2026

महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका” जनपद बदायूँ के सलारपुर विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में-

डॉ•विक्रान्त उपाध्याय (एसोसिएट प्रोफेसर)*

बीएड विभाग,नेहरू मेमोरियल शिवनारायण दास पीजी कॉलेज बदायूं, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ• नीतू गुप्ता (सहायक प्राध्यापक)

अर्थशास्त्र विभाग,नेहरू मेमोरियल शिवनारायण दास पीजी कॉलेज, बदायूं, उत्तर प्रदेश ,भारत

Abstract

किसी भी राष्ट्र के सतत और समावेशी विकास के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण होना अत्यन्त आवश्यक है। भारत में स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के आर्थिक ,सामाजिक, राजनीतिक प्रभावी उपकरण के रूप में कार्य कर रहे है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य जनपद बदायूं के सलारपुर विकासखण्ड में स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं की आर्थिक स्थिति, बचत की प्रवृत्ति, रोजगार के अवसर, निर्णय लेने की क्षमता तथा सामाजिक जागरूकता का विश्लेषण किया गया है यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीय आकड़ों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में जनपद बदायूँ के सलारपुर विकासखण्ड का चयन किया गया है। शोध- पत्र में शोध प्रविधि के अन्तर्गत उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा 225 स्वयं सहायता समूह से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं का चयन किया गया और साक्षात्कार अनुसूची का भी प्रयोग किया गया। अध्ययन के द्वारा ज्ञात होता हैं कि सलारपुर विकासखण्ड की वे महिलाएँ जो स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं, उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में निरंतर सुधार हुआ है। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ऋण प्राप्त कर महिलाओं ने कुटीर उद्योग, पशुपालन और अन्य स्वरोज़गार गतिविधियाँ शुरू की हैं। इससे उनकी आय में वृद्धि हुई है, साथ ही साथ उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और परिवार व समाज में उनकी भूमिका अधिक सशक्त हुई है।

Keywords: *भारतीय अर्थव्यवस्था, स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर, ऋण, कुटीर उद्योग*

***Corresponding Author:**
डॉ•विक्रान्त उपाध्याय (एसोसिएट प्रोफेसर)
Email: mathmeena369@gmail.com

परिचय-

किसी भी देश की सामाजिक – आर्थिक स्थिति में सुधार देश की प्रगति के बिना उसका अस्तित्व संभव नहीं है महिलाओं के सतत विकास के लिए किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए महिलाओं का होना आवश्यक है। इसकी प्रगति में समान भागीदारी ऐसी अर्थव्यवस्था जो समान भूमिका की उपेक्षा करती है महिलाएं इसकी रणनीति के साथ आगे बढ़ सकती है। (2017 माथुर पी• और अग्रवाल पी•) विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार यदि महिलाओं को पुरुषों के बराबर रोजगार दिया जाए तो भारत की जीडीपी विकास दर 9 प्रतिशत से ऊपर रह सकती है अगर सिर्फ 50 प्रतिशत महिलाएं भी कामकाजी हो जाए तो भारत अपनी विकास दर को हर साल 1•5 प्रतिशत बढ़ा सकता है। (कुरुक्षेत्र **2022-23** पीयूष प्रकाश, डा• प्रेमसिह) महात्मा गांधी

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

ने कहा था,' एक पुरुष को शिक्षित किया जाए तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन यदि एक महिला को शिक्षित किया जाए तो पूरा राष्ट्र आगे बढ़ता है। इसी विचारधारा को ध्यान में रखते हुए देश में स्वयं सहायता समूहों की शुरुआत की गई। जिससे महिलाओं की सामूहिक शक्ति से उनके परिवारों, उनके समुदायों, और पूरे देश की सामाजिक आर्थिक तस्वीर बदली जा सके। (कुरुक्षेत्र 7 मई 2022 हेना नकवी) भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं, विशेषकर ग्रामीण महिलाओं की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। भारत की अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जहाँ महिलाओं की भागीदारी 60 प्रतिशत से भी अधिक है। कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग, और घरेलू उत्पादन में महिलाओं का योगदान लगातार बढ़ रहा है। इसके बावजूद ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाओं और निर्णय लेने की प्रक्रिया में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विश्व भर में यह मान्यता है कि गरीबी से निपटने और समुदाय के जीवन स्तर को सुधारने का सर्वोत्तम तरीका गरीबों, विशेष कर महिलाओं को स्वयं सहायता समूह में संगठित करके सामाजिक रूप से सशक्त बनाना है स्वतंत्रता के बाद से ही हमारे देश में महिलाओं के उत्थान के लिए कई नवोन्मेषी योजनाएं शुरू की गई हैं। महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक एंव राजनीतिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए वर्ष 1975 को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में घोषित किया और इसी क्रम में सरकार ने विकास के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के लिए समान अवसर दिलाने के लिए वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण के रूप में घोषित किया है। नौवीं पंचवर्षीय योजना 1997 - 2002 के कल्याणकारी कार्यक्रमों में इसे ध्यान में रखते हुए और विकास की अवधारणा को सशक्तिकरण की ओर मोड़ते हुए भारत सरकार ने ग्रामीण गरीब महिलाओं के उत्थान के लिए स्वयं सहायता समूह का दृष्टिकोण अपनाया। (**Dr B. Suguna 2006)** अभी हाल में ही एक जिला एक उत्पाद (**ODOP)** योजना के अंतर्गत प्रत्येक जिले के विशेष उत्पादों को सरकार के द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है। इस योजना के द्वारा स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को अचार, पापड़, तथा ज़री-ज़रदोज़ी कढाई आदि हस्तशिल्प उत्पादों के निर्माण एवं विपणन में सहायता मिल रही है। इससे ग्रामीण महिलाओं को रोजगार एवं आत्मनिर्भरता के अवसर प्राप्त हुए हैं। (अप्रैल 2022 हेना नकवी) स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण न केवल व्यक्तिगत महिला और महिला समूह को लाभ पहुंचाएगा, बल्कि सामूहिक विकास के माध्यम से परिवारों और समुदाय को भी समग्र रूप से लाभान्वित करेगा। शोध-पत्र का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने में स्वयं सहायता समूह की भूमिका का अध्ययन करना है।

सशक्तिकरण का अर्थ-

सशक्तिकरण जागरूकता और क्षमता निर्माण की एक प्रकिया है जो अधिक भागीदारी निर्णय लेने की अधिक शक्ति और नियंत्रण तथा परिवर्तनकारी कार्रवाई की ओर ले जाती है। महिलाओं का सशक्तिकरण व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार के परिवर्तन को समाहित करता है यह ज्ञान शक्ति और अनुभव प्राप्त करने के माध्यम से उनकी अंतनिर्हित क्षमता को मजबूत करता है। **(Dr. B. Suguna 2006)**

स्वयं सहायता समूह का अवधारणा-

स्वयं सहायता समूह की अवधारणा वर्ष 1976 में बांग्लादेश के चटगांव विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस के द्वारा विकसित किया गया , जो सूक्ष्म वित्त के क्षेत्र में बांग्लादेश में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया। भारत में स्वयं सहायता समूह आंदोलन की शुरुआत 1972 में (**SEWA**) स्व-रोज़गार महिला संघ से हुई, जिसने महिलाओं को संगठित कर उन्हें बचत, ऋण और छोटे व्यवसायों से जोड़ने का अवसर दिया। भारत में नाबार्ड ने वर्ष 1986 - 87 में स्वयं सहायता समूह की शुरुआत की , लेकिन वास्तविक प्रयास 1991- **1992** में स्वयं सहायता समूह बैंक के लिंकेज के साथ आया। स्वयं सहायता समूह गरीब महिलाओं का एक ऐसा छोटा समूह होता है जिसमें सामान्यता 10 से 20 महिलाएं शामिल होते हैं इस समूह के सदस्य नियमित रूप से छोटी-छोटी बचत जमा करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर समूह के सदस्यों को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है स्वयं सहायता समूह की प्रमुख विशेषताओं में नियमित बचत , लगातार बैठकर अनिवार्य

उपस्थिति, समय पर भुगतान और संचारित प्रशिक्षण आदि शामिल है। इसी संदर्भ में स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों, विशेषकर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज देश में 1.2 करोड़ से अधिक स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें 88% महिलाएँ हैं। 1992 का स्वयं सहायता समूह -बैंक लिंकेज कार्यक्रम दुनिया की सबसे बड़ी सूक्ष्म वित्त परियोजना बन चुका है। इन समूहों ने 472,405 करोड़ रुपये की बचत जमा की है और 67 लाख स्वयं सहायता समूह को 151,051 करोड़ रुपये का बैंक ऋण मिला है। इन समूहों ने महिलाओं में बचत, आय, बैंकिंग का उपयोग, डिजिटल लेन–देन और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है।

बदायूं जिले में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन **(NRLM)** के द्वारा स्वयं सहायता समूह की तेजी से वृद्धि हुई है। यहाँ 5,000 से अधिक स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें 50,000 से अधिक महिलाएँ जुड़ी हुई हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के द्वारा महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिए त्रिस्तरीय संस्थागत ढांचा विकसित किया गया है, जिसमें सबसे निचले स्तर पर स्वयं सहायता समूह का गठन किया जाता है। इसके बाद ग्राम संगठन (**VO)** बनते हैं, जो लगभग 10–15 स्वयं सहायता समूहों का समन्वय करते हैं। उच्चतम स्तर पर क्लस्टर स्तरीय संघ (**CLF)** कार्य करता है, जो कई ग्राम संगठनों को एकीकृत कर उनके प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता, उद्यम विकास और क्षमता निर्माण को मजबूत करता है। जनपद बदायूं के सलारपुर बिकासखण्ड में वर्तमान में कुल 18 स्वयं सहायता समूह सक्रिय हैं, जो ग्राम संगठन और उसके बाद **CLF** से जुड़े हुए हैं। यह संख्या ब्लॉक मिशन प्रबंधन इकाई (**BMMU),** सलारपुर द्वारा उपलब्ध स्थानीय आंकड़ों पर आधारित है। स्वयं सहायता समूहों में सामान्यतः 10-**12** महिलाओं का समूह बनाया जाता है। 50 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं के लिए पाँच-पाँच सदस्यीय समूह बनाए जाते हैं ताकि उनकी सहभागिता सुगम और प्रभावी हो सके। इसी प्रकार, दिव्यांग महिलाओं को भी पाँच सदस्यीय समूहों में संगठित किया जाता है, जिससे उन्हें समान अवसर और सहयोग प्राप्त हो सके।

पूर्व साहित्य समीक्षा-

कुमार धनपत, डा॰ सुगंधे आनंद, नागवंशी डा॰ राजकुमार (2025) ने , अपने शोध में " ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का एक आथिर्क अध्ययन मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के विशेष संदर्भ में "किया जो कि स्वयं सहायता समूह में शामिल होने के बाद महिला सदस्यों द्वारा विभिन्न आय उत्पन्न करने वाली गतिविधियों में सम्मिलित हैं जिसके परिणाम स्वरुप महिलाओं के आथिर्क सशक्तिकरण अर्थात महिला उत्तरदाताओं के आय, रोजगार के दिन और बचत की मात्रा में वृध्दि हुई इस प्रकार स्वयं सहायता समूह आंदोलन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं में उनके पारिवारिक संरचना, उम्र, ऋण तक पहुंच, सामुदायिक और भूमि स्वामित्व में भागीदारी महिलाओं को मुख्य रूप से प्रभावित किया है

पूनम कालश , सविता सिंघल एंव एस॰ के॰ शर्मा ने " महिला सशक्तिकरण हेतु बढ़ता कदम स्वयं सहायता समूह "लेख में स्पस्ट किया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 75% से अधिक आबादी की आजीविका का मुख्य आधार कृषि है। कृषि के अलावा ग्रामीण लोगों के पास आय का कोई वैकल्पिक साधन नहीं होता। कृषि में वर्ष में केवल 5–6 महीने ही काम मिलता है, बाकी समय पर रोजगार की समस्या रहती है। आय की कमी के कारण ग्रामीणों को अपनी जमीन और गहने गिरवी रखने पड़ते हैं। गरीबी और मजदूरी के कारण वे गिरवी रखी संपत्ति को छुड़ा नहीं पाते। बीमारी, मृत्यु, शादी जैसे सामाजिक कार्यों में खर्च बढ़ने से ऋण की सीमा बढ़ जाती है। बैंक शाखाओं का बिस्तार होने के बावजूद ग्रामीणों की पहुँच बैंकों तक नहीं हो पाती। गरीबों को ऋण आवश्यकता छोटे ऋणों से जुड़ी होती है, जिन्हें बैंक जोखिमपूर्ण मानते हैं। बैंक छोटे ऋण देने में हिचकिचाते हैं, जिससे ग्रामीण साहूकारों पर निर्भर हो जाते हैं। अकेला व्यक्ति इस समस्या से नहीं उबर सकता, लेकिन समूह बनाकर बचत करने से पूंजी इकट्ठी की जा सकती है। सामूहिक बचत से लोग एक-दूसरे की आर्थिक सहायता करते हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों, विशेषकर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में प्रभावी सिद्ध हुए हैं।

हेना नकवी ने अपना लेख " सामूहिक नारी शक्ति के प्रतीक स्वयं सहायता समूह में लिखा है, कि स्वयं सहायता समूह वे छोटे समूह होते हैं, जिनमें सामान्यतः 10–12 महिलाएँ मिलकर अपने

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सम्मान, आत्मनिर्भरता और विकास के उद्देश्य से एकजुट होती हैं। ये महिलाएँ आपसी सहयोग से बचत करती हैं, छोटे ऋण लेती हैं और आय बढ़ाने के कार्य करती हैं। इससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण होता है, जिसका सकारात्मक प्रभाव उनके परिवार और समाज पर भी पड़ता है। आर्थिक बदलाव के साथ-साथ महिलाओं की सामाजिक स्थिति में भी सुधार होता है। इस प्रकार स्वयं सहायता समूह देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ए. रहमान (1999) के अनुसार, सूक्ष्म ऋण के तीन उद्देश्य हैं: पहला, महिलाओं की ऋण तक पहुंच बढ़ाने से उनकी आय क्षमता में वृद्धि होने की उम्मीद है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और घर में उनका सम्मान बढ़ेगा; दूसरा, विश्व के सबसे गरीब व्यक्तियों में महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है। यूएनडीपी (1997) ने अपनी मानव विकास रिपोर्ट में कहा है कि प्रतिदिन 1 अमेरिकी डॉलर से कम पर जीवन यापन करने वाले 1.3 अरब लोगों में से लगभग 70% महिलाएं हैं। महिलाओं में बेरोजगारी की दर अधिक है और वे पुरुषों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक वंचित हैं। समाज में देखा गया है कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी मिलती है और वे अनौपचारिक कार्यों में लगी रहती हैं। अपनी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए, महिलाओं को वित्तीय सेवाओं तक प्रभावी पहुंच की आवश्यकता है। तीसरा, महिलाओं को समूहों में संगठित करने से उनकी समूह एकजुटता में सुधार होता है, जिससे उनका सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण मजबूत होता है। महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करके और उनका समर्थन करके, सूक्ष्म ऋण एक प्रभावी सशक्तिकरण उपकरण बन जाता है।

कर्माकर• के•जी• – भारतीय सूक्ष्म ऋण **(2008)** इस पुस्तक में महिला स्वयं सहायता समूहों को ग्रामीण वित्तीय समावेशन की रीढ़ बताया गया है। लेखक ने विश्लेषण करके बताया कि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक निर्णय-निर्माण में सहायक है।

शोध-उद्देश्य -

1. सलारपुर ब्लॉक के स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।

2-स्वयं सहायता समूह के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य में आए परिवर्तनों का मूल्यांकन करना।

3**.** महिलाओं के आर्थिक **-** सामाजिक सशक्तिकरण और स्वतंत्र निर्णय, आत्मविश्वास, सामाजिक भागीदारी पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत अध्ययन के लिए बदायूं जनपद के सलारपुर ब्लॉक का चयन किया गया है। शोध हेतु स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं को अनुसंधान की इकाई के रूप में लिया गया है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा कुल 225 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। आंकड़ों के संग्रहण के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण तथा आत्मनिर्भरता में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन अवलोकन, साक्षात्कार विधि द्वारा किया गया है, जबकि द्वितीयक आंकड़ों के लिए संबंधित पुस्तकों, शोध-ग्रंथों **,** कृत्रिम बुद्धिमत्ता इंटरनेट**,** शोधपत्र एवं सरकारी प्रकाशनों का अध्ययन किया गया है।

यह जनपद मुख्य रूप से कृषि एवं कुटीर उद्योग पर आधारित है, जिसे इस क्षेत्र की आर्थिक रीढ़ माना जाता है। जनपद बदायूं का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 5**,**168 वर्ग किलोमीटर है। वर्तमान में जनपद बदायूं में 5 तहसीलों एवं 15 विकासखण्डों में विभाजित है **।** 2011 की जनगणना के अनुसार ,जनपद **बदायूं की कुल जनसंख्या लगभग 3681,825** है। जिसमें 17.5% लोग शहरी क्षेत्रों में और 82•49 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। शहरी जनसंख्या 644,595 थी, जिसमें से 337,383 पुरुष और शेष 307,212 महिलाएं थीं। बदायूं के ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुषों की जनसंख्या 1,630,376 और महिलाओं की जनसंख्या 1,406,925 थी। जनपद की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों

में निवास करती है। जनपद बदायूं की कार्यशील जनसंख्या का विवरण निम्न प्रकार व्यक्त किया गया है।

जनपद बदायूं - कार्यशील जनसंख्या का विवरण

	कुल	**पुरुष**	**महिला**
मुख्य कार्यकर्ता	875,763	795,070	80,693
कृषक	521,224	489,712	31,512
कृषि श्रमिक	157,687	145,069	12,618
घरेलू उद्योग	23,086	14,059	9,027
अन्य श्रमिक	173,766	146,230	27,536
सीमांत श्रमिक	231,580	144,546	87,034
है गैर-कार्यरत	2,574,553	1,028,143	1,546,410

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि कुल 8,75,763 व्यक्ति मुख्य कार्यकर्ता से जुड़े हैं, जिनमें 7,95,070 पुरुष तथा केवल 80,693 महिलाएँ शामिल हैं, जो कि मुख्य कार्यों में महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम है। मुख्य कार्यकर्ताओं में सबसे बड़ा वर्ग किसान 521224 है, जिनमें 4,89,712 पुरुष और 31,512 महिलाएँ हैं। कृषि श्रमिक की संख्या 1,57,687 है, जिनमें 1,45,069 पुरुष तथा 12,618 महिलाएँ सम्मिलित हैं। घरेलू उद्योगों में कुल 23,086 व्यक्ति कार्यरत हैं, इसमें पुरुषों की संख्या 14,059 तथा महिलाओं की संख्या 9,027 है, जो इस क्षेत्र में भी महिलाओं की अपेक्षाकृत कम भागीदारी को दर्शाता है। इस वर्ग में 1,73,766 व्यक्ति आते हैं, जिनमें 1,46,230 पुरुष और 27,536 महिलाएँ हैं। सीमांत श्रमिकों की कुल संख्या 2,31,580 है, जिनमें 1,44,546 पुरुष और 87,034 महिलाएँ हैं। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अल्पकालिक या अस्थायी कार्यों में अपेक्षाकृत अधिक संलग्न हैं। गैर-कार्यरत जनसंख्या की संख्या 25,74,553 है, जिसमें 10,28,143 पुरुष तथा 15,46,410 महिलाएँ शामिल हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं का एक बड़ा वर्ग घरेलू कार्यों या अन्य कारणों से आर्थिक गतिविधियों में सम्मिलित नहीं है। इसी संदर्भ में महिलाओं के बड़े वर्ग के लिए स्वयं सहायता समूहों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है।

ग्रामीण महिलाओं की आयु के आधार पर शैक्षिक स्थिति का विवरण-

सारणी संख्या- 1

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

क्रमांक	शैक्षिक विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	निरक्षर	4	1•78
2	प्राथमिक	7	3•33
3	माध्यमिक	5	2•22
4	हाईस्कूल	21	9•33
5	इण्टर	34	15•11
6	स्नातक	67	29•78
7	परास्नातक	51	22•45
8	डिप्लोमा/तकनीकी शिक्षा,अन्य	36	16•00
	कुल योग	225	100•00

उपरोक्त सारणी के द्वारा स्पष्ट होता है कि निरक्षर उत्तरदात्रियों की संख्या **1.78** है, प्राथमिक स्तर तक पढी उत्तरदात्रियों की संख्या 3•33 प्रतिशत है, माध्यमिक स्तर तक पढी उत्तरदात्रियों की संख्या 2•22 है, हाईस्कूल और इण्टर उत्तरदात्रियों की संख्या 9•33, **15•11** प्रतिशत है, वहीं स्नातक स्तर उत्तरदात्रियों की संख्या 29•78 प्रतिशत है, स्नातकोत्तर स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 22•45 प्रतिशत है, अन्य शिक्षा स्तर की उत्तरदात्रियों की संख्या 16 प्रतिशत है। सारणी से स्पष्ट होता है स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के वाद शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ है।

सारणी संख्या - 2

क्रम संख्या	**उत्तरदात्रियों का स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पहले आपकी कोई नियमित आय थी।**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1-	हाँ	35	15•56
2-	नहीं	190	84•44
	योग	**225**	**100**

उपरोक्त सारणी से पता चलता है कि 84•44 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह से जुड़ने पहले ग्रामीण महिलाओं नियमित आय नहीं थी , जबकि 15•56 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं की आय हैं।

सारणी संख्या - 3

क्रम संख्या	स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के बाद आप की नियमित आय में वृद्धि हुई	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	**185**	**82•23**
2-	नहीं	**40**	**17•77**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के वाद नियमित आय 82•23 प्रतिशत वृद्धि हुई जबकि 17•77 प्रतिशत महिलाओं की आय में वृद्धि नहीं हुई।

सारणी संख्या - 4

क्रम संख्या	उत्तरदात्रियों को स्वयं सहायता समूह के द्वारा ऋण मिला है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	200	88•89
2-	नहीं	25	11•11
	योग	225	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 88•89 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह के द्वारा ग्रामीण महिलाओं को ऋण प्राप्त हुआ जबकि 11•11 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं को ऋण प्राप्त नहीं हुआ।

सारणी संख्या **- 5**

क्रम संख्या	उत्तरदात्रियों को स्वयं सहायता समूह के द्वारा प्राप्त ऋण का उपयोग व्यवसाय में किया है।	आवृत्ति	प्रतिशत

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

1-	हाँ	**195**	**86.67**
2-	नहीं	**30**	**13.33**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 13•33 प्रतिशत ऋण का उपयोग व्यवसाय में नहीं किया गया हैं जबकि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने 86•67 प्रतिशत ऋण लेकर व्यवसाय में प्रयोग किया है।

सारणी संख्या - 6

क्रम संख्या	उत्तरदाताओं का स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के बाद आजीविका में सुधार हुआ।	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	205	**91•12**
2-	नहीं	20	**08•88**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 91•12 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह के जुड़ने वाद ग्रामीण महिलाओं की आजीविका में सुधार हुआ है जबकि 08•88 प्रतिशत महिलाओं का आजीविका में सुधार नहीं हुआ।

सारणी संख्या -7

क्रम संख्या	**SHG** के जुडने पर क्या आपके परिवार और समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ी है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	**185**	**82•23**
2-	नहीं	**40**	**17•77**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 82•23 प्रतिशत महिलाओं को अपने परिवार और समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा बढी है जबकि 17•77 प्रतिशत महिलाएँ को अभी भी परिवार और समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा नहीं मिल पाई है।

सारणी संख्या - 8

क्रम संख्या	**SHG** जुडने के वाद क्या आप अपने घर और व्यवसाय से जुड़े निर्णय स्वयं लेती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	**195**	**86•67**
2-	नहीं	**30**	**13•33**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 86•67 प्रतिशत महिलाएं घर और व्यवसाय से जुडे निर्णय स्वयं लेती है जबकि 13•33 प्रतिशत महिलाएं अभी भी स्वयं निर्णय नहीं ले पाती।

सारणी संख्या - 9

क्रम संख्या	स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के वाद क्या आप स्वयं को आत्मनिर्भर महसूस करती हैं	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	205	**91•12**
2-	नहीं	20	**08•88**
		225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 91•12 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह की महिलाएं स्वयं को आत्मनिर्भर महसूस करती है। जबकि 08•88 प्रतिशत महिलाएं अपने आप को आत्मनिर्भर महसूस नहीं करती है।

सारणी संख्या -10

क्रम संख्या	**SHG** से जुड़ने के बाद क्या आपकी डिजिटल सेवाओं (फोन पे, गूगल पे) का उपयोग बढ़ा है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	**150**	**66•67**
2-	नहीं	75	**33•33**
		225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 66•67 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह की महिलाएं डिजिटल सेवाओं (फोन पे, गूगल पे) का उपयोग कर रही है। जबकि 33•33 प्रतिशत महिलाएं डिजिटल सेवाओं का उपयोग नहीं कर पा रही है।

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

सारणी संख्या - 11

क्रम संख्या	क्या आपको सरकार के द्वारा **SHG** संबंधित योजनाओं का लाभ मिला है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हां	**200**	**88•89**
2-	नहीं	25	**11•11**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि सरकार के द्वारा 88•89 स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को लाभ मिला जबकि 11•11 प्रतिशत महिलाओं को सरकार के द्वारा लाभ नहीं मिल पाया।

सारणी संख्या -12

क्रम संख्या	क्या वर्तमान समय में ग्रामीण समाज में **SHG** का महत्व बढ़ रहा है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	**205**	91•12
2-	नहीं	20	08•88
	योग	**225**	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 91•12 प्रतिशत ग्रामीण समाज में स्वयं सहायता समूह का महत्व बढ़ रहा है जबकि 08•88 का मानना है कि स्वयं सहायता समूह का महत्व नहीं बढ रहा हैं।

सारणी संख्या - 13

क्रम संख्या	**SHG** के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	210	93•34
2-	नहीं	**15**	06•66
	योग	**225**	100

उपरोक्त सारणी में संकलित तथ्यों के आधार पर 93•34 का मानना है कि स्वयं सहायता समूह के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गए लेकिन 06•66 का मानना कोई भी कार्यक्रम नहीं चलाए जा रहें है।

सारणी संख्या-14

क्रम संख्या	क्या स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद आपको ऑनलाइन के माध्यम से वस्तुएं बेचने की सुविधा मिली है	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हाँ	**40**	**17•77**
2-	नहीं	**185**	**82•23**
	योग	225	**100**

उपरोक्त सारणी के संकलित तथ्यों के आधार पर 17•77 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह की महिलाएं ऑनलाइन के माध्यम से वस्तुएं का विक्रय कर रही हैं जबकि 82•23 प्रतिशत वस्तुएँ अभी भी ऑनलाइन के माध्यम से वस्तुएं विक्रय करने की सुविधा नहीं है।

सारणी संख्या - 15

क्रम संख्या	क्या स्वयं सहायता समूह द्वारा निर्मित स्वदेशी उत्पादों की राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग बढ़ी है?	आवृत्ति	प्रतिशत
1-	हां	20	08•88
2-	नहीं	**205**	91•12
	योग	**225**	100

उपरोक्त सारणी तथ्यों के आधार पर ज्ञात होता है कि 08•88 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह द्वारा निर्मित स्वदेशी उत्पादों की मांग वढ़ी है जबकि 91•12 प्रतिशत समूह द्वारा निर्मित उत्पादों की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मांग नहीं बढी है।

निष्कर्ष और सुझाव-

उपरोक्त सारणी एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के साक्षात्कार से यह स्पष्ट होता है कि सलारपुर ब्लॉक की बैंक सखी ने बताया कि सरकारी सहयोग से महिलाओं को केवल ऋण ही नहीं मिलता , बल्कि प्रशिक्षण की सुविधा भी प्रदान की जाती है। महिलाओं ने ऋण एवं प्रशिक्षण का उत्पादक उपयोग कर रोजगार सृजन के नए आयाम स्थापित किए हैं, जैसे— दाल फैक्ट्री, डेयरी, दुकान, कैंटीन, कुटीर एवं लघु उद्योग, हस्तशिल्प आदि। अभी हाल में ही इस ब्लॉक की सखी के द्वारा गोबर से प्राकृतिक पेंट बनाने जैसे नवाचारपूर्ण प्रयास भी किए गए हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि यदि महिलाओं को उचित अवसर एवं संसाधन उपलब्ध कराए जाएं, तो वे आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ अन्य महिलाओं को भी रोजगार प्रदान कर सकती है उपरोक्त सारणी-1 के द्वारा स्पष्ट होता है कि सलारपुर बिकासखण्ड में 225 महिलाओं पर सर्वाधिक 29•78 प्रतिशत

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

महिलाएं स्नातक स्तर की है, इससे ज्ञात होता है कि स्वयं सहायता समूह में जुडने के वाद महिलाओं की शिक्षा के स्तर में वृध्दि हुई । सारणी -2 के आधार पर स्वयं सहायता समूह में जुड़ने से पहले 84•44 प्रतिशत महिलाओं की आय नहीं थी जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यधिक दयनीय थी जबकि सारणी - 3 के द्वारा स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के वाद 82•23 प्रतिशत महिलाओं की आय में वृद्धि हुई जिससे उनके जीवन स्तर में काफी सुधार हुआ। सारणी- 4 के द्वारा स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से महिलाओं को 88•89 प्रतिशत ऋण प्राप्त हुआ जो कि सारणी- 5 के आधार पर 86•89 प्रतिशत ऋण का उपयोग व्यवसाय में किया गया है । सारणी- 6 के आधार पर 91•12 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह के जुड़ने के बाद ग्रामीण महिलाओं की आजीविका में सुधार हुआ है। सारणी- 7 से स्पष्ट होता है कि 82•23 प्रतिशत महिलाओं को अपने परिवार और समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान मिला है। सारणी - 8 को आधार मानकर 86.67% महिलाएं घर और व्यवसाय से जुड़े स्वयं निर्णय लेती हैं और साथ ही साथ सारणी- 9 से स्पष्ट है कि 91.12 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह की महिलाएं आत्मनिर्भर महसूस करती है । सारणी -10 के आधार पर 66.67 प्रतिशत महिलाएं डिजिटल सेवाओं (फोन पे, गूगल पे) का उपयोग कर रही है सारणी **-11** के द्वारा स्पष्ट होता है कि 17.77 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह की महिलाएं ऑनलाइन के माध्यम से वस्तुएं विक्रय कर रही है जो कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण और तकनीकी ज्ञान देकर हम ऑनलाइन के माध्यम से वस्तुओं को विक्रय करने में मदद कर सकते है । सारणी -12 के आधार पर सरकार के द्वारा 88.89 प्रतिशत स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को लाभ मिला है जो कि सारणी- 13 में 91.12 प्रतिशत ग्रामीण समाज में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं का महत्व बहुत अधिक बढ रहा है। सारणी -14 के आधार पर 93.34 प्रतिशत का मानना है कि स्वयं सहायता समूह के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकार के द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं जिसके कारण स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को लाभ प्राप्त हुआ है। सारणी - 15 के आधार पर 8.88 प्रतिशत समूह के द्वारा निर्मित स्वदेशी उत्पादों की मांग बढी इससे स्पष्ट होता है कि इन उत्पादों को और अधिक प्रोत्साहन एवं प्रचार-प्रसार देकर उनकी मांग में वृद्धि की जा सकती है। प्रस्तुत शोध के द्वारा स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं की आर्थिक स्थिति अधिक मजबूत हुई है। साथ ही पारिवारिक पोषण, स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा तथा जीवन स्तर में भी सकारात्मक सुधार देखने को मिला है। महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है तथा वे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम हुई हैं। समाज में उनकी भागीदारी भी पहले की अपेक्षा अधिक सुनिश्चित हुई है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूह न केवल ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण आधार है, बल्कि "आत्मनिर्भर भारत" की अवधारणा को जमीनी स्तर पर साकार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सुझाव के रूप में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, जिसमें उत्पाद की पैकेजिंग, मानकीकरण, डिजिटल मार्केटिंग तथा ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के उपयोग की जानकारी दी जाए। यदि सरकार, कॉरपोरेट सेक्टर के तकनीकी विशेषज्ञ तथा राज्य स्तरीय संस्थाएं मिलकर संस्थागत सहयोग प्रदान करें, तो स्वयं सहायता समूह स्थानीय स्तर से आगे बढ़कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हो सकते हैं। इससे सलारपुर ब्लॉक की महिलाओं की आय में वृद्धि होगी, रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्राप्त होगी।

स्रोत / पुस्तके-

1-कुमार धनपत , सुगंधे डां• आनंद , नागवंशी डा• राजकुमार (2025) ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का एक आर्थिक अध्ययन मध्य प्रदेश के अनूपपुर जिले के विशेष संदर्भ में

2-आर्या रिंकी (2021), महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन राधा कमल मुखर्जी : चिन्तन पराम्परा,वर्ष 2023

3-कालश पूनम, सिंघल सविता, एवं शर्मा एस• के• (2017) महिला सशक्तिकरण हेतु बढ़ता कदम स्वयं सहायता समूह

4-सिन्हा डॉ स्वाति (2024) स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में भागीदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: सतत विकास की प्राप्ति का एक मार्ग

5-श्रीवास्तव डॉ• अनिल कुमार, डौली (2023) ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक प्रस्थिति एवं भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

6-कुरूक्षेत्र पत्रिका ,7 मई 2022 हेना नकवी

7-कुरूक्षेत्र (2022-23 पीयूष प्रकाश, डा• प्रेम सिंह

8-पुरी वी• के• ,मिश्रा एस. के. एवं भारत गर्ग(2024) भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाऊस

9-Karmakar, K.G. (2008) – "Microfinance in India" (Book)

10-https://www.censusindia.co.in/district/budaun-district-uttar-pradesh-149

11-Government of Uttar Pradesh – UPSRLM (2018–2022) District Progress Reports (Budaun)

12-SEWA (2019), Self Employed Women's Association: Empowering Women through Collective Action, Ahmedabad.

13https://www.nabard.org/auth/writereaddata/File/SHGBLP%20in%20India%20-Final%20Report.pdf

14-https://en.wikipedia.org/wiki/Self-help_group_(finance)

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)